प्रेमचंद

जन्म	:	31 जुलाई 1880 ।
निधन	:	8 अक्टूबर 1936 ।
जन्म-स्थान	:	ग्राम-लमही, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।
मूलनाम	:	धनपत राय (आरंभिक लेखन नवाब राय के नाम से)
माता-पिता	:	आनंदी देवी एवं मुंशी अजायब राय ।
शिक्षा	:	1910 में इंटर, 1919 में बी० ए० ।
वृत्ति	:	प्राइवेट ट्यूशन, अध्यापकी, जिला बोर्ड की सब-इंस्पेक्टरी, जालियाँवाला बाग हत्याकांड और असहयोग आंदोलन छिड़ने पर सरकारी नौकरी छोड़ी ।
संपादन	:	मर्यादा, माधुरी, जागरण, हंस ।
प्रमुख कृतियाँ	:	सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि मौलिक उपन्यास । लगभग तीन सौ कहानियाँ, मानसरोवर (आठ खंड) । अनेक निबंध, लेख, टिप्पणियाँ आदि 'विविध प्रसंग' (तीन खंड) में संकलित, अनेक अनुवाद ।

हिंदी के महान कथाकार प्रेमचंद अब विश्व साहित्य की विभूति बन चुके हैं । भारतीय स्वाधीनता के बाद समय के गुजरने के साथ-साथ उनकी प्रसिद्धि देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण करती हुई वैश्विक रूप ग्रहण कर चुकी है । प्रेमचंद बहुत गहरे और विशिष्ट रूप में भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आंदोलन की उपज और अभिव्यक्ति थे । राजनीतिक स्वाधीनता की परिणतियाँ शेष हैं और नवजागरण की समग्र चेतना का प्रसार अभी बाकी है । राजनीति के साथ-साथ समाज, संस्कृति, राष्ट्रीयता और मानववाद के पैमाने पर अनेक तरह के रचनात्मक परिवर्तन प्रकट और प्रच्छन्न रूप में अभी जारी हैं और जब तक यह प्रक्रिया चल रही है, प्रेमचंद और उनका साहित्य हमारे लोकतंत्र के भविष्य के साथ भी प्रासंगिक और अर्थपूर्ण रीति से जुड़े हुए हैं । हमारा लोकतंत्र अपनी सफलता और सिद्धि के लिए उनके साहित्य को अपनी प्रेरणा, कसौटी और पैमाने के रूप में ग्रहण कर सकता है । बदले हुए और बदलते हुए समय की चेतना के साथ उनका साहित्य हमारे लोकतंत्र के लिए भी एक अनिवार्य पाठ है ।

प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक रूपों से जोड़ने का काम किया था । उस युग के जीवन-समाज की समस्याओं—पराधीनता, जमींदारों-महाजनों और सरकारी अमलों द्वारा किसानों के शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज की कुप्रथा, स्त्रियों की पराधीनता, वृद्ध विवाह, बाल विवाह, विधवा समस्या, सांप्रदायिक वैमनस्य, जातिभेद, अस्पृश्यता और अनगिनत मध्यवर्गीय कुंठाएँ—इन सारी परिस्थितियों और समस्याओं ने उन्हें कथा रचना के लिए प्रेरित किया

था । उन्होंने अधीरता और बेचैनी से इन समस्याओं और जीवन के विविध पहलुओं को अपने साहित्य में चित्रित किया था । ये समस्याएँ विविध रूपों में आज भी हमारे साथ हैं । इसलिए प्रेमचंद आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं ।

प्रेमचंद का साहित्य हमारे जातीय और सामाजिक जीवन का दर्पण है । वह हमारे संक्रमणशील समाज के अंत:संघर्षों तथा उसकी जिजीविषा का साक्ष्य भी है । प्रेमचंद मुख्य रूप से किसानों के लेखक हैं । यहाँ प्रस्तुत कहानी 'पूस की रात' जो उनकी श्रेष्ठ कहानियों में शामिल की जाती है, एक छोटे किसान की ही कहानी है । एक ओर वह व्यवस्था जिसमें रात-दिन हाड़ गलाकर भी वह जाड़ों से बचने के लिए कंबल नहीं खरीद पाता तो दूसरी ओर पूस की वह कड़कड़ाती ठंढ जिसका प्रतिकार करने के लिए उसके पास जरूरी सुविधा और साधन नहीं । इस तरह प्रकृति और मानवकृत व्यवस्था के बीच निहत्था हल्कू पूस की ठिठुरती रात में खेत की रखवाली करने के लिए खेत की मड़ैया में जबरा के साथ अपनी रात गुजारता है । ठंढ से बचने के लिए उसके पास मूक जानवर उसका कुत्ता जबरा है जिसे अपनी देह से लगाकर वह ठंढ का प्रतिकार करता है । पर यह प्रतिकार अपनी परिणतियों में क्या सचमुच प्रतिकार सिद्ध हो पाता है ? नीलगायें रात में उसकी फसल चर जाती हैं । प्रेमचंद ने विशाल फलक पर इस कहानी की रचना की है ।

◆ ◆ ◆

"उनकी काफी कंहानियाँ ऐसी हैं जिनमें ग्रामीण कथाओं का रस और उनकी शैली अपनाई गई है । आमतौर से उनकी कहानियों में जो एक ठेठपन है, पाठक के हृदय में अपनी बात को सीधे उतार देने की जो ताकत है, उन्होंने हिंदुस्तान के अक्षय ग्रामीण कथा भंडार से सीखी है ।

प्रेमचंद की कहानियाँ केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं लिखी गई । उन सभी में कोई न कोई सुझाव, जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण, किसी समस्या का हल जरूर मिलता है । यह उनकी खूबी है कि सारी बात वह ऐसा चित्र खींचकर कहते हैं कि कहानी में उपदेशकों का रूखापन नहीं आने पाता । उनके चित्र बड़े ही सजीव होते हैं मानो घटना आँखों के सामने हो रही हो...

उनकी शैली की चित्रमयता, भाषा पर असाधारण अधिकार, चरित्र चित्रण का कौशल और हर जगह व्यंग्य और हास्य ढूँढ़ लेने की क्षमता उन्हें एक प्रभावशाली कलाकार बनाती है । उनकी सहृदयता और मानव प्रेम उन्हें जनता का प्रिय कलाकार बनाती है ।"

(प्रेमचंद और उनका युग)
–डॉ० रामविलास शर्मा

पूस की रात

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा–सहना आया है, लाओ जो रुपए रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी । पीछे फिरकर बोली–तीन ही तो रुपए हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा ? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी । उससे कह दो, फसल पर रुपए दे देंगे । अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा । पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता । मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा । बला से जाड़ों मरेंगे, बला सिर से टल जाएगी । यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला – ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा ।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली–कर चुके दूसरा उपाय ! जरा सुनूँ, कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई । बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो । ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपए न दूँगी-न दूँगी ।

हल्कू उदास होकर बोला–तो क्या गाली खाऊँ ।

मुन्नी ने तड़पकर कहा–गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है ?

मगर यह कहने के साथ उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था ।

उसने जाकर आले पर से रुपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए । फिर बोली–तुम छोड़ दो अबकी से खेती । मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी । किसी की धौंस तो न रहेगी । अच्छी खेती है । मजूरी करके लाओ, वह उसी में झोंक दो, उस पर से धौंस ।

हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा

हो । उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-छपटकर तीन रुपए कम्मल के लिए जमा किए थे । वह आज निकले जा रहे थे । एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था ।

x x x

पूस की अँधेरी रात ! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे । हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था । दो में से एक को भी नींद न आती थी ।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा – क्यों जबरा, जाड़ा लगता है ? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे । अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ । जानते थे, मैं यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए । अब रोओ नानी के नाम को ।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया । उसकी श्वान बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है ।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा – कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे । यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है । उठूँ तो फिर एक चिलम भरूँ । किसी तरह रात तो कटे ! आठ चिलम तो पी चुका । यह खेती का मज़ा है ! और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबराकर भागे ! मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ-कम्मल । मजाल है कि जाड़े की गुजर हो जाए । तकदीर की खूबी है ! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें !

हल्कू उठा और गड्ढे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी । जबरा भी उठ बैठा ।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हाँ, जरा मन बहल जाता है ।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा ।

हल्कू – आज और जाड़ा खा ले । कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा । उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा ।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया । हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी ।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे जो कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा । कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट; पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था ।

जब किसी तरह से न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे-से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला दिया । कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था । जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है; और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी ! अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता । वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा में पहुँचा दिया ! नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था ।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई । इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी । वह झपटकर उठा और छतरी के बाहर आकर भूँकने लगा । हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया पर वह उसके पास न आया । हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा । एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ता । कर्त्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था ।

x x x

एक घंटा और गुजर गया । रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया । हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया । फिर भी ठंड कम न हुई । ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है । उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी हैं । सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े । ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सवेरा होगा । अभी पहर भर से ऊपर रात है ।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का बाग था । पतझड़ शुरू हो गई थी । बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था । हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ । रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे, तो समझे कोई भूत है । कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो; मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता https://www.evidyarthi.in/

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला । जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा ।

हल्कू ने कहा - अब तो नहीं रहा जाता जबरू ! चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें ।

टाँठे हो जाएँगे तो फिर आकर सोएँगे । अभी तो रात बहुत है ।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की ओर चला ।

बगीचे में घुप अँधेरा हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था । वृक्षों से ओस की बूँदें टप-टप नीचे टपक रही थीं ।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खुशबू लिए हुए आया ।

हल्कू ने कहा - कैसी अच्छी महक आई जबरू ! तुम्हारी नाक में भी सुगंध आ रही है ?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी । उसे चिचोड़ रहा था ।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा । जरा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया । हाथ ठिठुरे जाते थे । नंगे पाँव गले जाते थे । और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था । इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा ।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा । उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगीं । उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों । अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था ।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था । एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली और दोनों पाँव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर । ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था ।

उसने जबरा से कहा—क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है ?

जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा—अब क्या ठंड लगती ही रहेगी !

'पहले से यह उपाय न सूझी, नहीं इतनी ठंड न खाते ।'

जबरा ने पूँछ हिलाई ।

'अच्छा आओ इस अलाव को कूदकर पार करें । देखें, कौन निकल जाता है । अगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा न करूँगा ।'

जबरा ने उस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा ।

'मुन्नी से कल न कह देना नहीं तो लड़ाई करेगी ।'

यह कहता हुआ वह उछला और अलाव के ऊपर से साफ निकल गया । पैरों में जरा लपट लगी; पर वह कोई बात न थी । जबरा आग के गिर्द में घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ ।

हल्कू ने कहा—चलो-चलो, इसकी सही नहीं । ऊपर से कूदकर आओ । वह फिर कूदा

और अलाव के इस पार आ गया ।

X X X

पत्तियाँ जल चुकी थीं । बगीचे में फिर अँधेरा छाया था । राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी; पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी ।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा । उसके बदन में गर्मी आ गई थी; पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था ।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा । हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है । शायद नीलगायों का झुंड था । उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थीं । फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रही हैं । उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी ?

उसने दिल में कहा—नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता । नोच ही डाले । मुझे भ्रम हो रहा है । कहाँ ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता । मुझे भी कैसा धोखा हुआ ।

उसने जोर से आवाज लगाई—जबरा, जबरा ।

जबरा भूँकता रहा । उसके पास न आया ।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली । अब वह अपने को धोखा न दे सका । उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था । कैसा दंदाया हुआ बैठा था । इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान पड़ा । वह अपनी जगह से न हिला ।

उसने जोर से आवाज लगाई—लिहो-लिहो ! लिहो ! !

जबरा भूँक उठा । जानवर खेत चर रहे थे । फसल तैयार है । कैसी अच्छी खेती थी; पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं ।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा ।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं । और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था । अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था ।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया ।

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी । और मुन्नी कह रही

थी – क्या आज सोते ही रहोगे ? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा- क्या तू खेत से होकर आ रही है ?

मुन्नी बोली – हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया । भला ऐसा भी कोई सोता है ! तुम्हारे मड़ैया डालने से क्या हुआ ।

हल्कू ने बहाना किया–मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है । पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ ।

दोनों फिर खेत की डाँड़ पर आए । देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है, और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है ।

मानो प्राण ही न हो ।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे । मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी । पर हल्कू प्रसन्न था ।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा–अब मजूरी करके मालगुंजारी भरनी पड़ेगी ।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा–रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा ।

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. हल्कू कंबल के पैसे सहना को देने के लिए क्यों तैयार हो जाता है ?
2. मुन्नी की नजर में खेती और मजूरी में क्या अंतर है ? वह हल्कू से खेती छोड़ देने के लिए क्यों कहती है ?
3. हल्कू खेत पर कहाँ और कैसे रात बिता रहा था ?
4. हल्कू ने जबरा को आगे की ठंढ काटने के लिए क्या आश्वासन दिया ?
5. हल्कू की आत्मा का एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था । इसके पीछे क्या कारण था ?
6. हल्कू और जबरा की मैत्री को लेखक ने अनोखा क्यों कहा है ?
7. हल्कू कैसे जान सका कि रात अभी पहर भर बाकी है ?
8. जब ठंढ बर्दाश्त के बाहर हो जाती है तो हल्कू उसका सामना कैसे करता है ?
9. लेखक ने पवन को निर्दय क्यों कहा है ? निर्दय पषन द्वारा पत्तियों का कुचलना से आप क्या समझते हैं ?

10. आग तापते हुए हल्कू कैसी क्रीड़ा करता है ? अपने शब्दों में वर्णन करें ।
11. हल्कू और मुन्नी दोनों के चरित्र की विशेषताएँ बताएँ । आपको इन दोनों में अधिक महत्त्वपूर्ण कौन लगा ?
12. यह कहानी भारतीय किसान के मजदूर बनने की त्रासदी की ओर संकेत करती है । कहानी के आधार पर स्पष्ट करें ।
13. 'पूस की रात' कहानी में 'जबरा' एक प्रमुख पात्र है । कहानी में उसका क्या महत्त्व है ?
14. निम्नलिखित वाक्यों की सप्रसंग व्याख्या करें –
    (क) बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है ।
    (ख) हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो ।
    (ग) अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था https://www.evidyarthi.in/
    (घ) तकदीर की खूबी है । मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें ।
15. 'कर्त्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था ।'– इस कथन के आलोक में कहानी में जबरा की भूमिका का मूल्यांकन करें ।
16. 'दोनों खेत की दशा देख रहे थे । मुन्नी के मुख पर उदासी छाई हुई थी । पर हल्कू प्रसन्न था ।' ऐसा क्यों ? मुन्नी की उदासी और हल्कू की प्रसन्नता का क्या कारण है ?

पाठ के आस-पास

1. प्रेमचंद ने किसानों के जीवन पर कई कहानियाँ लिखी हैं । ऐसी पाँच कहानियों का संग्रह करें और उनके कथ्य पर कक्षा में चर्चा करें ।
2. भारतीय कृषकों की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं ? इस विषय पर एक निबंध लिखें ।
3. प्रेमचंद की कई कहानियों में पशु पात्र हैं । ऐसी कुछ कहानियों का संकलन करें और मित्रों से इन कहानियों पर चर्चा करें ।
4. प्रेमचंद का महान उपन्यास 'गोदान' पूस की रात का ही औपन्यासिक विस्तार है ? इस विषय पर अपने शिक्षक एवं मित्रों से चर्चा करें ।
5. प्रेमचंद ने उर्दू में लिखना शुरू किया था । इसका प्रभाव आद्यंत उनकी भाषा पर रहा । उदाहरण के लिए इसी कहानी में आप 'ठंढ' के लिए 'ठंड' का प्रयोग पाएँगे । इसी पुस्तक में आप 'सिक्का बदल गया', 'नया कानून' जैसी कहानियों में भी ऐसे प्रयोग पाएँगे । आप पुस्तक में आए इस प्रयोग को सावधानीपूर्वक चिह्नित करें ।

भाषा की बात

1. वाक्य प्रयोग द्वारा इन मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें –
   गला छूटना, बला टलना, ठंढा हो जाना, आँख तरेरना, बाज आना, भौंहें ढीली पड़ना, आहट मिलना
2. 'गला छूटना', 'आँख तरेरना' की तरह शरीर के अन्य अंगों की सहायता से दस मुहावरों को अर्थ सहित लिखें एवं उनका वाक्यों में प्रयोग करें ।

3. 'उठ बैठा' संयुक्त क्रिया का उदाहरण है । ऐसे पाँच अन्य उदाहरण दें ।
4. निम्नलिखित विशेषणों से भाववाचक संज्ञा बनाएँ –
ढीली, दीर्घ, ठंडी, विशेष, गर्म, प्रसन्न
5. 'पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ'– यहाँ 'मैं ही जानता हूँ' संज्ञा उपवाक्य है । 'मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है' में 'वह कहाँ है' संज्ञा उपवाक्य है । इसी तरह निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा उपवाक्य छाँटें –
(क) चिलम पीकर हल्कू लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे जो कुछ भी हो अबकी सो जाऊँगा ।
(ख) हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है ।
6. निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र और संयुक्त वाक्य चुन कर उन्हें सरल वाक्य में बदलें–
(क) हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा ।
(ख) राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी ।
(ग) पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ ।
(घ) यह कहता हुआ वह उछला और अलाव के ऊपर से साफ निकल गया ।
(ड.) मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है ।
7. हल्कू और लेखक की भाषा में फर्क है । आप बताएँ कि यह फर्क क्यों है ? इसके कुछ उदाहरण पाठ से चुनकर लिखें ।
8. वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय कीजिए–
ढेर, अलाव, लौ, दोहर, जी, गर्व, ठंढ, पूँछ, चादर, राख, शीत, झुंड, सत्यानाश

शब्द निधि

घुड़कियाँ	:	फटकार, धमकियाँ	स्फूर्ति	:	फुर्ती
मजूरी	:	मजदूरी	अकर्मण्य	:	काम न करने वाला, आलसी
खैरात	:	मुफ्त	दंदाया	:	गरमाया
तत्परता	:	शीघ्रता	कम्मल	:	कंबल
अरमान	:	अभिलाषा	हार	:	खेत-बधार
धधकाना	:	भड़काना	भारी-भरकम	:	वजनदार
टाँठे	:	करारा, दृढ़	डील	:	आकार
अलाव	:	जहाँ आग तापी जाती है·	पछुआ	:	पश्चिमी हवा जो जाड़ों में बहुत ठंढी होती है
मालगुजारी	:	उपज पर दिया जाने वाला कर			
भीषण	:	भयानक	दोहर	:	दुहरी चादर
दीर्घ	:	बड़ा	असूझ	:	बेवकूफी
श्वान	:	कुत्ता	मड़ैया	:	झोपड़ी